जयतीर्थ
— ॐ विष्णुपाद श्रीभक्तिसिद्धान्त सरस्वती ‘प्रभुपाद’ पूर्व-परिचय
श्रीजयतीर्थ श्रीमध्व सम्प्रदायके एक संन्यासी आचार्य थे। इनका पूर्व नाम धोण्डरघुनाथ पन्थ था। इनका जन्म पण्ढरपुरके निकवर्त्ती मंगलावेड नामक एक गाँवमें सम्वत् १९४८ में हुआ था । पिताका नाम रघुनाथराव और माताका रुक्माबाई था। इनकी पत्नीका नाम भीमाबाई था। पत्नीके साथ झगड़ा होनेसे घर-बार छोड़ कर श्रीरंगपत्तन नामक स्थानमें अश्वारोही सैन्यदलमें भर्ती हो गये थे।

दीक्षा और समाधि
एक दिन ये घोड़ेपर सवार होकर एक नदी पार कर रहे थे। सहसा वहीं
पर अक्षोभ्यमुनिसे उनकी भेंट हुई। अक्षोभ्यमुनि मध्व सम्प्रदायके एक प्रतिभाशाली आचार्य थे। थोडी देरके सत्संगसे ही धोण्डरघुनाथकी आँखें खुल गयीं। उन्हें दिव्य ज्ञान प्राप्त हो गया। उन्होंने अपनी वृत्ति त्यागकर सम्वत् ११६७ के मार्गशीर्ष महीने में शुक्ला पंचमी तिथिको उन्हींसे विधिवत् संन्यास ले लिया । सम्वत् १९९० की आषाढ़ी कृष्णा पंचमीके दिन ८० वर्षकी अवस्थामें उन्होंने समाधि ग्रहण कर ली। गौड़ीय वैष्णवोंकी गुरुपरम्परामें इनका नाम आदर की दृष्टिसे देखा जाता है।

रचित मूल ग्रन्थ और टीकाएँ
मध्व-सम्प्रदायमें प्रवेश कर २२ वर्ष ७ महीनेमें उन्होंने
अनेक ग्रन्थोंकी रचना की है। उनके मूल ग्रन्थ ये हैं—
(१) प्रमाण-पद्धति, (२) वादावली, (३) शतापराध स्तोत्र और (४) पद्यमाला।
उनके टीका-ग्रन्थ—
(१) माध्वभाष्य पूर्णप्रज्ञदर्शनकी तत्त्व-प्रकाशिका टीका।
(२) सुधा, माध्वभाष्यका अनुव्याख्यान।
(३) न्याय-विवरण टीका।
(४) प्रमेय-दीपिका टीका।
(५) न्याय-दीपिका टीका।
(६) तत्त्वसंख्यान टीका।
(७) तत्त्वविवेक टीका।
(८) उपाधि-खण्डन टीका।
(९) मायावाद-खण्डन टीका।
(१०) मिथ्यात्वानुमान-खण्डन टीका।
(११) तत्त्व-निर्णय टीका।
(१२) न्याय कल्पतरु प्रमाण-लक्षण टीका।
(१३) कथा-लक्षण टीका।

(१४) तत्त्वद्योत टीका।
(१५) कर्म-निर्णय टीका।
(१६) भाष्य टीका।
(१७) ईशावास्य भाष्य टीका।
(१८) ऋग्भाष्य टीका।

गुरु और शिष्य-परम्परा पूर्वगुरु-परम्परा—
(१) श्रीमन्मध्वाचार्य
(२) पद्मनाभ, सम्वत् ११२०
(३) नरहरितीर्थ, सम्वत् ११२७
(४) माधवतीर्थ, सम्वत् ११३६
(५) अक्षोभ्यतीर्थ, सम्वत् १९५०
(६) जयतीर्थ, सम्वत् ११६७

शिष्य परम्परा—
(उडूपी मठके ‘तीर्थ’ उपाधिधारी उत्तराढ़ी
मठकी तत्त्ववादी शाखा)

(१) विद्याधिराज ११९०, (२) कवीन्द्रतीर्थ १२५४, (३) वागीशतीर्थ १२६१, (४) रामचन्द्र १२६९, (५) विद्यानिधि १२९८, (६) रघुनाथ १३६६, (७) रघुवर्य १४२४, (८) रघुत्तम १४७१, (९) वेदव्यास १५१७, (१०) विद्याधीश १५४१, (११) वेदनिधि १५५३, (१२) सत्यव्रत १५५७, (१३) सत्यनिधि १५६०,
(१४) सत्यनाथ १५८२, (१५) सत्याभिनव १५९५, (१६) समयपूर्ण १६२८, (१७) सत्यविजय १६४८, (१८) सत्यप्रिय १५५९, (१९) सत्यवोध १६६६, (२०) सत्यसन्ध १७०५, (२१) सत्यवर १७१६, (२२) सत्यधर्म १७१९, (२३) सत्यसंकल्प १७५२, (२४) सत्यसञ्जुष्ट १७६३, (२५) सत्यपरायण १७६३, (२६) सत्यकाम १७८५, (२७) सत्येष्ट १७९३, (२८) सत्यपराक्रम १७९४, (२९) सत्यवीर १८०१, (३०) सत्यधीर १८०८।

गौड़ीय-वैष्णव-शाखा
(१) ज्ञानसिन्धु, (२) दयानिधि, (३) विद्यानिधि, (४) राजेन्द्र, (५) जयधर्म, (६) पुरुषोत्तम और विष्णुपुरी, (७) ब्रह्मण्य, (८) व्यासतीर्थ, (९) लक्ष्मीपति, (१०) माधवेन्द्रपुरी, (११) ईश्वरपुरी,
(१२) श्रीकृष्णचैतन्य सम्वत् १४२६।
‘जयतीर्थ-विजय’ नामक ग्रन्थमें जयतीर्थका जीवन-चरित लिखा है। पद्मनाभाचार्यने अपने रचित ग्रन्थमें उक्त ग्रन्थका उल्लेख किया है और लिखा है कि विद्यारण्यभारती, वेदान्तदेशिक और जयतीर्थ समसामयिक व्यक्ति हैं।